परमेश्वर की सर्वज्ञता:

हमारा परमेश्वर ''सीखता'' नहीं है

तीसरी सहस्राब्दी में पहुंच चुके औद्योगिक देशों का अधिकतर ध्यान शिक्षा पर है। यह समझ आने लगी है कि आधुनिक सभ्यता के सामने आने वाली जटिलताओं का सामना करने के लिए ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इसी कारण सूचना के सुपर हाईवे के विकास के लिए उत्सुकता बढ़ी है।[1] शिक्षा के कार्यक्रमों का निरन्तर विस्तार लोगों की अपने से कई वर्ष आगे के बौद्धिक विकास की इच्छा को दिखाता है।

मनुष्य के स्वभाव से लगता है कि उसमें ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा है। दो वर्ष के बच्चे की गतिविधियां कार्य करने में उसकी जिज्ञासा को दिखाती हैं। पांच वर्ष के छोटे-छोटे बच्चों के कठिन प्रश्नों ने बहुत से माता-पिता को उलझन और परेशानी में डाल दिया है। ऐसे लोग आम मिल जाते हैं जिन्होंने ज्ञान अर्पित करने और प्रभावशाली ढंग से कार्य करने के लिए बीस-तीस वर्ष सीखने में लगा दिए हैं। सीखने पर इतना ज़ोर ज्ञान की आवश्यकता के कारण बढ़ता है। हमारी उपलब्धि से इस बात में दिलचस्पी और बढ़ती है कि जितना ज्ञान हमें होना चाहिए और जितना हम जानना चाहते हैं, वास्तव में हमें उतना ज्ञान नहीं है। यह प्रयास निरन्तर जारी रहता है क्योंकि हमारा मानना है कि हम सीख सकते हैं। हम इन सब बातों से भली भांति परिचित हैं। वास्तव में, खोजने, खोज करने और कुछ पाने की इच्छा *मानवीय स्वभाव* में जन्मजात ही है। मनुष्य के लिए यह बात सामान्य है।

परन्तु, ज्ञान के संग्रह से हम बहुत बड़ी गलती भी कर सकते हैं। तकनीक के इस युग में , जहां ज्ञान के विशेष उपयोग व बड़े लाभ मिले हैं। हम उन उपलब्धियों को सलाम करते हैं जिनसे मनुष्य ने काम करने में निपुणता हासिल की है। क्या मानवीय प्रगति के इस हवाई हमले का कोई ''कमज़ोर'' पहलू भी है ? हां ! एक बहुत ही संक्रामक रोग फैल रहा है जिसे बनावटी ''छद्म-बौद्धिकवाद'' कहा जाता है। असहनीय घमण्ड, द्वेषपूर्ण-पूर्वाग्रह, और झूठे भरोसे के साथ यह मान्यता कि ''सब बातों का माप मनुष्य है'' इसके लक्षण हैं। यह दृष्टिकोण जिसे ''मानव केन्द्रित ईश्वरीयता''[2] की एक किस्म कहा जा सकता है मानवीय मन के एक घातक अवगुण को छिपाता है। अपनी पूरी अन्तर्दृष्टि से भी, हम में से अधिकतर लोग इतना भी नहीं सीख पाए कि उस परमेश्वर को ग्रहण कर लें जो हमारे ऊपर इतना बड़ा है कि हमारी बौद्धिकता उसके सामने बचकानी सी लगती है (1 कुरिन्थियों 1:18-25)।

परमेश्वर की सर्वव्यापकता का परिणाम उसकी सर्वज्ञता अर्थात परमेश्वर का असीम, विश्वव्यापी, सम्पूर्ण ज्ञान है।[3] पवित्र शास्त्र में इस बात पर ज़ोर दिया गया है। परमेश्वर के

बारे में अपने ''मित्रों'' से बात करते हुए, अय्यूब ने कहा था, ''वह तो पृथ्वी की छोर तक ताकता रहता है, और सारे आकाश मण्डल के तले देखता भालता है'' (अय्यूब 28:24)। बुद्धिमान ने नीतिवचन में कहा था, ''यहोवा की आंखें सब स्थानों में लगी रहती हैं, वह बुरे भले दोनों को देखती रहती हैं'' (नीतिवचन 15:3)। परमेश्वर के सर्वज्ञ होने की बहुत सी बातें हैं। बहुत से प्रश्न उठाए जा सकते हैं। आइए उनमें से कुछ एक पर विचार करते हैं।

इससे उठने वाले प्रश्न

आम तौर पर एक प्रश्न यह उठता है कि ''परमेश्वर को *कैसे* पता है?'' हम पहले ही कह चुके हैं कि सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता उसके निकट परिणाम हैं। क्या आपने कभी किसी को कहानी बताने वाले से यह पूछते हुए सुना है, ''तुम्हें कैसे पता चला?'' आम तौर पर, जवाब होता है, ''मैं *वहीं* था!'' असीमित रूप से, परमेश्वर के साथ भी यही बात है। उसे पता होता है क्योंकि वह हर जगह है। परन्तु, इससे यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि परमेश्वर को इसलिए पता है क्योंकि वह एक रिपोर्टर की तरह तथ्यों को एकत्र करता रहता है। याद रखें, हम किसी मनुष्य का नहीं, बल्कि परमेश्वर के स्वभाव का अध्ययन कर रहे हैं। जिस प्रकार परमेश्वर का स्वभाव *होना* है वैसे ही उसका स्वभाव जानना भी है। परमेश्वर होता नहीं है; वह पहले से ही विद्यमान *है*। परमेश्वर को सीखने की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह तो पहले से ही *जानता* है। परमेश्वर की सर्वव्यापकता तर्कसंगत ढंग से हमें यह समझाने में सहायता करती है कि उसे कैसे पता होता है।

एक और प्रश्न जो कभी-कभी पूछा जाता है वह यह है कि ''क्या परमेश्वर को सचमुच सब कुछ पता होता है?'' इसका उत्तर यह है, ''मुझे उम्मीद है, क्योंकि यदि उसको सब बातों का पता नहीं है, तो एक बात जिसका उसे पता नहीं है वही उसके लिए घातक सिद्ध हो सकती है, जिससे वह परमेश्वर नहीं रहेगा।'' बेशक, इस प्रश्न का अधिक सावधानी से उत्तर होना चाहिए। इसमें यह विचार भी शामिल है कि ''पता'' या जानने शब्द का इस्तेमाल कैसे किया जाता है।[4]

परमेश्वर अपने आपको आन्तरिक रूप से जानता है अर्थात वह स्वयं के बारे में पूरी तरह से अवगत है (1 यूहन्ना 1:5)। वह अपने विषय में प्रत्येक बाहरी बात को भी जानता है, अर्थात अपनी सृष्टि को भी, जिसमें मनुष्य भी शामिल है (अय्यूब 34:21)। यह सर्वज्ञ हमारे भीतर प्रवेश कर जाता है। भजन लिखने वाला पुकार उठा था कि परमेश्वर हमारे हृदय के विचारों को भी जानता है (भजन 139:2)। हां परमेश्वर बिना किसी अपवाद के सब बातों को जानता है।

अब तक जिन प्रश्नों पर ध्यान दिलाया गया है उनमें परमेश्वर को कैसे पता चलता है और कितना पता चलता है। एक अलग तरह का प्रश्न अक्सर उठता है: ''क्या परमेश्वर को पता होता है कि *यदि*... तो क्या होगा?'' इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यह प्रश्न सामान्यत: भविष्य से सम्बन्ध रखता है। यह अनिश्चितता की बात करता है, जो उन घटनाओं को बदल सकती है जो अभी घटी नहीं हैं। यह प्रश्न उन

लोगों द्वारा पूछा जाता है। जो यह सोचते हैं कि जो घटनाएं अभी घटी नहीं हैं, वे यूं ही अप्रत्याशित रूप से घट जाती हैं। परन्तु, परमेश्वर कभी भी हैरान नहीं होता है। उसे सभी अनिश्चितताओं के परिणाम का पता होता है चाहे वे भूत, वर्तमान या भविष्य की ही क्यों न हों। अन्य शब्दों में, यह जानने के अलावा कि ''यदि ... तो क्या होगा'' उसे यह भी पता होता है कि ''यदि ... होता तो क्या होता।'' उसे यह भी पता होता है कि यदि बातें व्यवहार में बदल जाएं तो क्या होगा (मत्ती 11:21, 22)। उसके सर्वज्ञ होने का यह सुस्पष्ट परिणाम है।

परमेश्वर की सर्वव्यापकता अनन्तकाल से हर जगह एक ही समय उसकी उपस्थिति है; अनन्तकाल से एक ही बार सब बातों का ज्ञान उसकी सर्वज्ञता है। मनुष्य के दृष्टिकोण से, हम कहते हैं कि परमेश्वर सब कुछ जानता था और उसे सब कुछ पता होगा। यह बाइबल की भाषा है जिसमें हमें सम्बोधित किया गया है। परमेश्वर का दृष्टिकोण समय विहीन और विश्वव्यापी है। उसके लिए, भूत और भविष्य *अब* ही हैं। उसका अस्तित्व, उसकी उपस्थिति, उसका ज्ञान हमारे समय तथा अनन्तकाल में एक जैसा ही है। इसका अर्थ यह है कि ''यदि'' के प्रश्न झूठे तर्क विज्ञान पर आधारित हैं। ये प्रश्न हमारी समझ में कमी के कारण ही पनपते हैं।

इसके संघर्ष

सब कुछ जानने वाले परमेश्वर के स्वभाव के पहलू से हमारा संघर्ष कई कारणों से कठिन है। (1) परमेश्वर की और हमारी बुद्धि में बहुत अन्तर है (यशायाह 55:8, 9)। (2) जब तक परमेश्वर अपने आपको स्वयं प्रकट नहीं करता, हम उसे नहीं जान सकते और उसका प्रकाशन बड़ा ही चयनात्मक और सीमित है (व्यवस्थाविवरण 29:29)। (3) परमेश्वर का प्रकाशन दिया जा चुका है, और वह पर्याप्त है (2 पतरस 1:3), फिर भी उसे समझना कभी-कभी कठिन होता है (2 पतरस 3:15, 16)। (4) हम यहां पृथ्वी पर समय के बन्धन में बन्धे हैं और हो सकता है कि हमारा अगला क्षण हमारे लिए अन्तिम हो (याकूब 4:13-16)। (5) सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि न केवल हमारी समझ ही सीमित है; हमारे जीवनों में पाप की बुराई भी है (रोमियों 3:23)।

इन बाधाओं से हम निराश हो सकते हैं। हो सकता है कि हम अभिभूत हो जाएं या फिर भयभीत। हो सकता है कि हमारे सामने आने वाली पहली बाधा को पार करना हमारे लिए अधिक कठिन लगे। ''यदि परमेश्वर 'पूर्णतया दूसरा है' तो मैं उसके साथ बात करना भी आरम्भ कैसे कर सकता हूं?'' दूसरी रुकावट से यह प्रश्न उठता है ''यदि मैं परमेश्वर की खोज करने का विकल्प चुनता हूं, तो उसका प्रकाशन तो चयनात्मक और सीमित है, फिर मैं कहां जाऊं?'' तीसरी रुकावट में एक और व्यथा है: ''यदि इस प्रकाशन को ही समझना कठिन है तो मैं कैसे कह सकता हूं कि मैंने उसे *उसके प्रकाशन में* पा लिया है?'' चौथी रुकावट में एक और व्यावहारिक प्रश्न उठता है ''यदि तुरन्त अर्थात अब, चरम नहीं है, तो मुझे यह समीक्षा करने और हर रोज अपने जीवन को चलाने का कैसे पता चल सकता है?'' अन्तिम रुकावट में एक बहुत ही गम्भीर समस्या मिलती है: ''मैं तो एक पापी हूं, फिर किस

आधार पर मैं कोई आशा रख सकता हूं? क्या यहां जीवित रहने की कोई सम्भावना है, कि परमेश्वर के सामने, जो सदा वर्तमान है और मेरे भीतर और बाहर की सब बातों को जानता है, इसके बाद कहने के लिए कुछ न हो?'' ये प्रश्न बहुत ही गम्भीर हैं। बहुत से दूसरे महत्वपूर्ण प्रश्नों की तरह इनके उत्तर एक-एक करके स्पष्ट रूप से नहीं दिए जा सकते। परन्तु, इनका उत्तर दिया जा *सकता* है। ऊपर दिए गए प्रश्नों की तरह हम जीवन के ऐसे प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ने की तलाश में रहते हैं।

परमेश्वर की सर्वज्ञता का अध्ययन करते हुए हमारे सामने एक चुनौती यह याद रखने योग्य है कि उसकी सर्वज्ञता उसकी इच्छा के जैसी नहीं है। इस भेद से ऊपर दिए प्रश्नों से पैदा होने वाले तनाव से कुछ राहत मिलती है। इस तथ्य का कि परमेश्वर सब कुछ जानता है यह अर्थ नहीं कि जो कुछ होता है वह सब उसकी इच्छा से ही होता है। परमेश्वर से मनुष्य की कोई तुलना नहीं है, परन्तु समझने में सहायता के लिए हम इसी अभ्यास की शरण लेते हैं।

एक असीमित और विश्वव्यापी आधार पर, परमेश्वर जानता है कि लोग किसी शारीरिक रोग से बढ़कर ख़तरनाक रूप में अयोग्य हो रहे हैं (यशायाह 64:6); पर ''वह नहीं चाहता कि कोई नाश हो; वरन यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)। इसलिए, वह नाश होने वालों को बचाने के लिए, उन्हें समझाता (यूहन्ना 6:45), चेतावनी (लूका 12:4, 5) और सब प्रकार की आवश्यक सहायता देता है।

इससे मिलने वाली व्याख्या

आइए पवित्र शास्त्र में भविष्यवाणी के विचार की ओर लौटते हैं। पहले तो, भविष्यवाणी इतनी व्यापक है कि इसे निकाल दें तो बाइबल शून्य हो जाएगी। बाइबल का अधिकांश भाग युक्तिसंगत, या पढ़ने के योग्य भी न होगा। कल्पना कीजिए कि भविष्यवाणी की बड़ी तथा छोटी पुस्तकों, ऐतिहासिक पुस्तकों में पाई जाने वाली भविष्यवाणियों, यीशु की भविष्यवाणी की शिक्षाओं, बातों और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बिना बाइबल कैसी होगी। पवित्र शास्त्र के इन सब भागों के बिना बाइबल को बाइबल न कहा जाता। हम इससे क्या अनुमान लगा सकते हैं? *बाइबल, अपनी भविष्यवाणी के व्यापक आयामों से, परमेश्वर की सर्वज्ञता का दर्पण है।* यह बात तब भी सत्य है जब भविष्यवाणी में भविष्य की बातें न हों। यदि प्रत्येक भविष्यवाणी को पूरा होने तक रखा जाता तो यह सत्य न होती। आखिर हमें बताया गया है कि भविष्यवक्ता की विश्वसनीयता भविष्यवाणी के पूरा होने पर ही बनती है (व्यवस्थाविवरण 18:22)।

निस्संदेह बाइबल की बहुत सी भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुई हैं। उनमें से कई भविष्यवाणियां अभी पूरी होनी हैं अर्थात बहुत सी अन्त समय की ओर संकेत करती हैं। फिर, बाइबल की भविष्यवाणी परमेश्वर की सर्वज्ञता को कैसे दिखाती है? बाइबल के समय की गई बहुत सी भविष्यवाणियां लगभग उसी समय पूरी हो गई थीं; अन्य भविष्यवाणियां थोड़ी देर के बाद पूरी हुईं; और कई तो सदियों बाद पूरी हुईं।[5]

बाइबल की पूरी हुई भविष्यवाणी एक उत्कृष्ट उदाहरण है जिसे इतिहास की सीमा में बन्धे मनुष्य परमेश्वर का *पूर्व* ज्ञान कहते हैं। ''पूर्वज्ञान'' का अर्थ है ''पहले से, या पहले जानना; पिछले का पहले ज्ञान होना।'' यह पूर्वज्ञान वास्तव में घटनाओं के ''सामान्य'' क्रम को उलटा कर देता है। किसी घटना का ज्ञान हमें उस घटना के घट जाने के *बाद* ही होता है। हो सकता है कि हम समय से पहले इसके बारे में ही विचार कर रहे हों। हो सकता है कि हम किसी घटना के घटने के बारे में बड़े आश्वस्त हों। क्या गलत ठहरने पर हम परेशान नहीं होते? आप जानते हैं, कि कभी-कभी हम परेशान हो जाते हैं!

परमेश्वर गलत नहीं है। अनन्तकाल में वह जानता है कि क्या हुआ, क्या हो रहा है और इतिहास (समय) में क्या होने वाला है। जिसे बाइबल के लेखक और हम परमेश्वर का पूर्वज्ञान कहते हैं वह सीमित ढंग से उसकी असीमित बुद्धि की एक व्याख्या है (प्रेरितों 2:23; रोमियों 11:2क)। इसके उलटा नहीं हो सकता। यदि परमेश्वर हमें अपनी सम्पूर्णता और अपने परिपेक्ष्य से ''दिखाना'' चाहता, तो वह निश्चय ही हमें एक दृश्य दिखा सकता था; परन्तु हम तो पापी हैं, फिर वैसे न होते, जैसे अब हैं।

नीचे दी गई रूपरेखा से हमें परमेश्वर की सर्वज्ञता को देखने में सहायक हो सकती है:

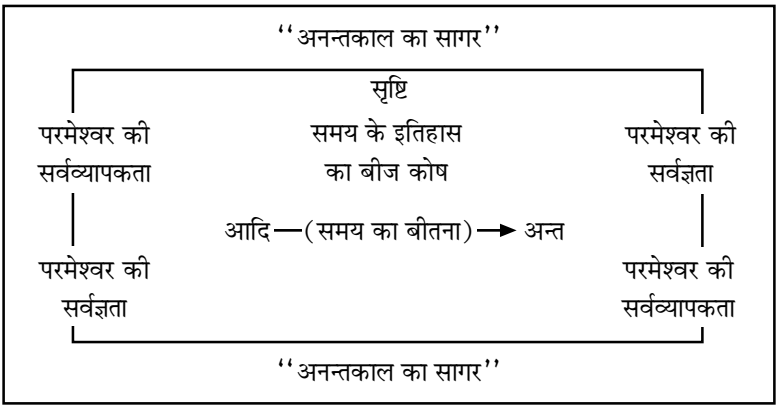

इस रेखाचित्र की बाहरी रेखा का अर्थ यह नहीं कि अनन्तकाल की सीमा है। अन्दर वाले आयताकार में हर बात अस्थाई समय की सीमा में दिखाई गई है। परमेश्वर की उपस्थिति को छोड़ अन्दर के आयताकार में दी गई हर बात का अन्त होगा। वह समय और अनन्तकाल दोनों में रहता है। समय के समाप्त हो जाने पर, उद्धार पाए हुए लोग और परमेश्वर सदा-सदा तक अनन्तकाल में रहेंगे। अपनी सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता में, परमेश्वर इस सबको ''देखता'' है। यह विशाल दृश्य पौलुस की नीचे दी गई पुकार के महत्व को दिखाता है:

> आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर हैं! उसके विचार

कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं! ... क्योंकि उसकी ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन (रोमियों 11:33-36)।

पाद टिप्पणियां

[1]फिलिप एल्मर-डिविट्ट, ''बैटल फ़ॉर द सोल ऑफ़ द इंटरनेट,'' *टाइम* 144 (जुलाई 1994): 50-55. [2]*अंथरोपॉस* मनुष्य के लिए सामान्य शब्द है। ''अन्थरोपोसेंट्रिक'' का अर्थ है ''मनुष्य-केन्द्रित'' ''ईश्वरीयता'' का सम्बन्ध ईश्वर या परमेश्वर से है। सबका केन्द्र बनकर मनुष्य अपनी नज़र में देवता बन गया है। [3]ई. एच. आइजैन्स, *द रियेलिटी ऑफ़ गॉड* (नैशविल्ले: विलियम्स, 1978), 12, 120. [4]यह हम इस पर विचार नहीं कर रहे हैं कि *हमें* कैसे पता है। हमारे कुछ ज्ञान का सम्बन्ध अनुभव से होता है। [5]1 राजा 11:29-32/12:15, 20; 1 राजा 21:23; 2 राजा 9:31-37/2 राजा 19:20-37; यशायाह 40:3/मत्ती 3:3; यशायाह 42:1-4/मत्ती 12:18-21; योएल 2:28-32/प्रेरितों 2:16-21; आदि।